# मनसा सेवा - 91

**अव्यक्त बापदादा :- (24/02/2002)**

➳ _ ➳ बापदादा देख रहे थे कि सबसे **तीव्र गति की सेवा है - वृति द्वारा वायब्रेशन फैलाना। वृत्ति बहुत तीव्र रॉकेट से भी तेज है।** वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुँच सकते हो।

➳ _ ➳ **वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। लेकिन एक बात वृत्ति द्वारा सेवा करने में रूकावट डाल रही है, वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलता है।** आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट जन्म तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं ना।

---

➢➢ वृत्ति अर्थात क्या?

➳_ ➳ योग का लक्ष्य है चित्त वृत्ति निरोधा... वृत्ति किसे कहेंगे?

→ घूमना... भंवर के जैसे घूमना...

■ वृत्ति को समझने के लिए पहले चित्त को समझना होगा... चित्त क्या है...

▶ मन ही चित्त है...

▶ मन उथला है...

▶ मन का गहरा तल चित्त है...

---

➢➢ मन में उत्पन्न होने वाली विचार तरंगे वृत्ति है...

➳_ ➳ झील में पत्थर डालने पर जो तरंगे उत्पन्न होती है... वे तरंगे वृत्ति है...

→ इन तरंगो को शांत कर देना योग है...

■ मन के गहरा तल में जो लहरे उठ रही हैं, वह वृत्ति है...

▶ चेतना में जो भी समाया है वह सब वृत्ति है...

---

➢➢ शास्त्रों में वृत्ति के 5 प्रकार बताये गए हैं...

➳_ ➳ प्रमाण

→ सही गायन... करेक्ट नोलेज

■ विचार तरंगे उठती ही रहती हैं...

■ ये रजो, तमो, सतो गुणों के आधार पर उठती रहती हैं...

■ जो चीज जैसी है, उसे वैसे ही समझना...

■ ज्ञान प्राप्त करने के तीन साधन हैं...

▶ प्रत्यक्ष अनुभव

▶ अनुमान

- विशवास

➳_ ➳ अपर्याय

→ चीजो को अपनी सुविधा अनुसार देखना...

- श्रीमत का सुविधा अनुसार अर्थ लगाना...

➳_ ➳ विकल्प

→ सोच रहे हैं, दिवा स्वप्न में ही खोये हैं...

- इस कल्पना जगत, फेंतेसी का निरोध कर वास्तविक जगत में जीना...

➳_ ➳ निद्रा

→ गहरी नींद को निद्रा कहेंगे...

- कुछ समय के लिए देह से डिटेच हो जाना भी निद्रा कह सकते हैं...

- आदिवासी समाज में किसी को स्वप्न नहीं आते थे...

➳_ ➳ स्मृति

→ स्मृति अर्थात जो कुछ भी स्टोर्ड है, सारे अनुभव... वे सब वृत्ति है...

---

➢➢ परमधाम में स्वयम को ले जाते हैं वह निर्विकल्प समाधी है...

➳_ ➳ राजयोग में जब परमधाम में टिकते हैं

→ तो ये पांचो वृत्तियां शांत हो जाती हैं...

→ और निर्विकल्प समाधि का अनुभव होता है...

---

➢➢ यदि हमारे में कोई को आकर्षण होता है...

➳_ ➳ इसका अर्थ है कि हमारा स्वयम में आकर्षण ज्यादा है...

→ परमधाम की स्थिति में बैठने का समय बढ़ाना है...

- जितना यह समय बढ़ेगा, उतनी ही चित्त की वृत्तियाँ शांत रहेंगी...

- अपनी वृत्ति को सतो प्रधान बनाना है...
- वृत्ति को ऊँचा उठाना है...

---